Part - II
Paper - III
हिन्दी प्रतिष्ठा

Ajanta
Page No.
Date

## "गीत-अगीत, कौन सुंदर है?"

गीत, अगीत, कौन सुंदर है?
गाकर गीत विरह की तटिनी
वेगवती बहती जाती है,
दिल हलका कर लेने को
उपलों से कुछ कहती जाती है।
तट पर एक गुलाब सोचता,
"देते स्वर यदि मुझे विधाता,
अपने पतझर के सपनों का
मैं भी जग को गीत सुनाता।"
गा-गाकर बह रही निर्झरी,
पाटल मूक खड़ा तट पर है।
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

बैठा शुक उस घनी डाल पर
जो खोंते पर छाया देती।
पंख फुला नीचे खोंते में
शुकी बैठ अंडे है सेती।
गाता शुक जब किरण वसंती
छूती अंग पर्ण से छनकर।
किन्तु, शुकी के गीत उमड़कर
रह जाते स्नेह में सनकर।
गूँज रहा शुक का स्वर वन में,
फूला मग्न शुकी का पर है।
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

दो प्रेमी हैं यहाँ, एक जब
बड़े साँझ आल्हा गाता है,
पहला स्वर उसकी राधा को
घर से यहाँ खींच लाता है।

Scanned by CamScanner

चोरी-चोरी खड़ी नीम की
छाया में छिपकर सुनती है,
'हुई न क्यों मैं कड़ी गीत की
बिधना,' यों मन में गुनती है।
वह गाता, पर किसी वेग से
फूल रहा इसका अंतर है।
गीत, अगीत, कौन सुंदर है?

रामधारी सिंह 'दिनकर' 'गीत-अगीत, कौन सुन्दर है?' कविता में गीत और अगीत दोनों में कौन अच्छा है? प्रश्न के उत्तर की खोज करते दिखाई देते है। साहित्य में ऐसी अनेक भावनाएँ हैं, जो मुखर नहीं हो सकी, गीतों की डोर में नहीं बँध सकी। वे अछूती भावनाएँ क्या कम सुन्दर है? अभिव्यक्ति के लिए उन्हें वाणी नहीं मिली, अगीत के भाव अब तक सुरक्षित है, क्या वे सुंदर नहीं? कवि कहना चाहता है कि अगीत का भी अपना सुंदर संसार है जो गीत के संसार से श्रेष्ठ और सुंदर है।

प्रथम अनुच्छेद में कवि कहता है कि सरिता वियोग का गीत गाती हुई प्रवाह में बही चली जा रही है। दिल हल्का करने हेतु पत्थरों से कुछ कहकर आगे बढ़ जाती है। नदी के किनारे खड़ा गुलाब सोचता है कि ईश्वर ने नदी को यदि स्वर दिये होते तो मैं भी तपझड़ का गीत संसार को सुनाता। कवि सोचता है कि नदी

Scanned by CamScanner

एक ओर कल-कल स्वर में गीत की अभिव्यक्ति दे रही है तो दूसरी ओर पतझड़ के वियोग भावों से भरा गुलाब खड़ा है, जो अभिव्यक्ति के लिए वाणी का संचार नहीं कर सका। दोनों में कौन सुन्दर है? यह प्रश्न कवि प्रथम अनुच्छेद में करता है।

द्वितीय अनुच्छेद में कवि कहता है कि एक शुक डाल पर बैठा है। खोते को यह डाल छाया दे रही है। शुकी अपने खोतों में अंडे से रही है। सुर्य की किरणें पत्तों से छनकर पड़ रही है और शुक के अंगों को छू रही है। शुक भावनाओं से भर कर गीत गा उठता है। किन्तु शुकी के गीत उमड़ते नहीं है, स्नेह के बंधन में बंधकर रह जाते हैं। शुक का स्वर वन में गूँज उठता है। यहाँ भी शुक का गीत और शुकी के मन की वे भावनाएँ जो अगीत हैं- कौन सुंदर है दोनों में? यह प्रश्न द्वितीय अनुच्छेद में कवि खड़ा कर देता है।

तृतीय अनुच्छेद में कवि कहता है कि दो प्रेमी हैं। एक साँझ होते ही आल्हा गाने लगता है। उस वीर-गान से प्रभावित होकर प्रथम स्वर में ही उसकी राधा खिंची हुई चली आती है। उसकी प्रेमिका उसके गीतों से आकर्षित होकर उसके पास आ जाती है। नीम की सुखद छाया में वह चोरी से खड़ी होकर प्रियतम का गान सुन रही है। वह सोचती है कि मैं ही गीत की कड़ी क्यों न बन गई। प्रेमिका का हृदय प्रसन्नता और आवेग से भर उठा है। कवि पुनः प्रश्न खड़ा कर देते हैं कि प्रियतम के गीत और प्रियतमा के अगीत- दोनों में कौन सुंदर है?

Scanned by CamScanner

निष्कर्षतः कवि यह कहना चाहते हैं कि काव्य में समस्त भावनाएँ प्रकाशित नहीं हो पाती हैं। जो गीत अभिव्यक्त होता है वह सुंदर तो है ही। काव्य में जिन कल्पनाएँ एवं भावनाएँ की अभिव्यक्ति नहीं हो पाती वह भी कम सुंदर नहीं होती। इसके लिए कवि तीन उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। कवि अप्रत्यक्ष रूप से यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि अगीत का सुंदर संसार गीत के संसार से श्रेष्ठ और श्रेष्ठकर है।

"गीत-अगीत, कौन सुंदर है?" कविता खड़ी बोली हिन्दी में लिखा गया है। इसमें सरल और सहज शब्दों का प्रयोग किया गया है। 'चोरी-चोरी' में पुनरुक्ति और 'गाकर गीत' में अनुप्रास अलंकार का सुंदर प्रयोग मिलता है।

डॉ. खुशि भूषण
सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया
दिनांक : 08.02.2022

Scanned by CamScanner